नया साल

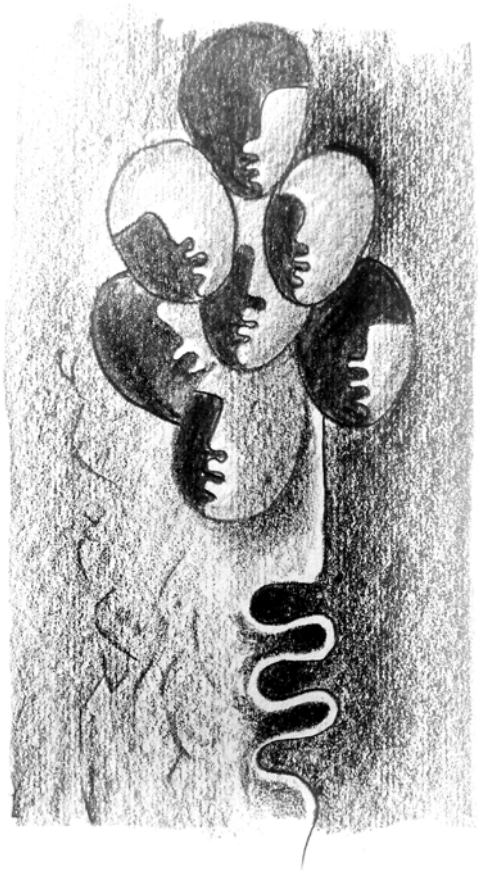

एक कांपता हाथ बदलता है कैलेण्डर
घूमता है एक रथ का पहिया छितराता खून
कवि अपना काम आसानी से करता है
घंटियां घनघनाती हैं मोमबत्तियों के प्रकाश में सहमी
फीकी कोमल लालसाएं बिना कटे केक के सामने
आस्तिक मनाता है नया साल

अमूर्त कलाकार के बिना तारीख और महीनों के
पंचांग में है रंगों का अत्याचार
हिजड़ों की गली में
नया साल आता है हिजड़ों के रूप में
एक रुपये के मैले नोट पर अशोक का दयालु स्तम्भ
सड़क की वैश्या को इतिहास सिखाता है

दुखते हुए पैरों से मैं घुसता हूं नए साल में
रात-भर अंगूरों को पैरों से मसलकर रस निकाल
नींद में की शराब भरता हूं चार प्यालियों में
एक प्याली प्यार के लिए, जिसे मैंने देखा सिर्फ भद्दे कपड़ों में
एक प्याली पुरखों के लिए, उजले सफेद वस्त्र पहने
जिसने हमें धकेला कठिनाई में
एक प्याली क्रांती के लिए, जो फिसलती रही छोटे-छोटे हाथों से
यह प्याली भावी पीढ़ीयों के लिए, जिन्होंने नहीं खोए हैं अब तक सारे सपने

दोस्तो आओ, आओ बच्चो
इस जर्जर मेज के गिर्द बैठो, वाल्मीकि जितनी पुरानी
मेरे साथ खाओ यह तुच्छ रोटी, जो बनाई मैंने शब्दों से
दुस्वप्नों की खमीर डालकर

पियो यह कडुआहट से बुदबुदाता प्याला, मुक्ति के देवता के नाम, अजन्मे
पियो यह ठंडा हुआ जा रहा है।

के. सच्चिदानंदन

भाषान्तर : राजेंद्र धोड़पकर